जैविक कृशि के सिद्धान्त

प्रस्तावना

अर्न्तराश्ट्रीय जैविक कृशि आन्दोलन संघ, एडीलेड, आस्ट्रेलिया 2005 द्वारा अनुमोदित सिद्धान्त जैविक कृशि के मूल हैं। यहीं से जैविक कृशि का प्रार्दुभाव एवं विकास होता है।

कृशि मनुश्य की आवष्यक मूलभूत क्रियाओं मे से एक है क्योंकि सभी मानवों को प्रतिदिन पोशण की आवष्यकता होती है। इतिहास, संस्कृति तथा सामाजिक मूल्य सभी कृशि में समाहित हैं। सिद्धान्त जो कृशि में व्यापक रुप में प्रयुक्त होते हैं वे व्यक्ति को मृदा, जल, पौधों तथा पषुओं को खाद्य तथा अन्य वस्तुओं के उत्पादन, तैयारी तथा वितरण के अर्न्तगत करने का मार्ग प्रषस्त करते हैं। उनका उद्‌देष्य व्यक्ति को जीवन्त भूमि पर कार्य कर एक दूसरे से जोड़ने तथा आने वाली पीढ़ी को एक सुनहरा भविश्य सौंपने का है।

जैविक कृशि के सिद्धान्त जैविक क्रियाओं को पूर्ण विविधता के साथ प्रोत्साहित करने का है। ये अर्न्तराश्ट्रीय जैविक कृशि आन्दोलन संघ विकास की स्थितियों, योजनाओं तथा स्तरों या मानकों का मार्ग प्रषस्त करते हैं तथा जैविक कृशि को विष्व–व्यापी अपनाने की दृश्टि के साथ प्रस्तुत करते हैं।

जैविक कृशि आधारित है:–

स्वास्थ्य के सिद्धान्त

प्रकृति के सिद्धान्त

पारदर्षिता के सिद्धान्त

सुरक्षा के सिद्धान्त

प्रत्येक सिद्धान्त पूर्ण व्याख्या के साथ स्पश्ट रुप से व्यक्त होता है तथा सम्पूर्णता से प्रयुक्त किये गये हैं। वे क्रिया को प्रेरित करने के लिए नैतिक सिद्धान्तों की तरह रखे गये हैं।

स्वास्थ्य के सिद्धान्त

जैविक कृशि मृदा, पौध, पषु, मनुश्य तथा अप्रत्यक्ष रुप से ग्रहों के स्वास्थ्य को जीवन्त तथा अक्षण बनाये रखने में सहायक है।

इसका मूल सिद्धान्त है कि व्यक्ति तथा समुदायों के स्वास्थ्य को पर्यावरण के स्वास्थ्य से अलग नहीं किया जा सकता है। उर्वर भूमि ही अच्छी उपज देने में सक्षम होती है जो मानव तथा पषु जगत को स्वस्थ बनाये रखने में सहायक होती है।

स्वास्थ्य जीवित रहने की प्रक्रिया की सम्पूर्णता है। यह केवल बीमारियों की अनुपस्थिति नहीं है बल्कि षारीरिक, मानसिक, सामाजिक, पर्यावर्णीय रख–रखाव है। प्रतिरक्षा, लचीलापन, नव–जीवन अच्छे स्वास्थ्य की विषेशताऐं हैं।

जैविक कृशि का योगदान, चाहे वह कृशि, प्रस्ंकरण, वितरण या उपभोग में हो, मृदा के सूक्ष्म जीव सामुच्य की जैविकता तथा प्रकृति के स्वास्थ्य को मनुश्य तक जीवित रखना है। इसका मुख्य सिद्धान्त भूमि में सूक्ष्म जीव सामुच्य की प्रचुरता, पोशित वातावरण तथा स्वास्थ्य मानच मानव में योगदान करने में सक्षम होता है। विषेश रुप से जैविक कृशि का लक्ष्य उच्च गुणवत्तायुक्त पोशण से भरपूर खाद्य उत्पादित करना है जो प्रतिरक्षात्मक स्वास्थ्य बनाये रखने मे सहयोगी हो। इस दृश्टिकोण से यह रासायनिक खादों, कीटनाषकों, पषुओं की दवाओं के प्रयोग से बचता है जो स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव डालते हैं।

प्रकृति के सिद्धान्त

जैविक कृशि का मूल आधार पोशित वातावरण अक्षुण बनाये रखने में सक्षम होता है। इसका मुख्य उद्देष्य भूमि, पादप, पष तथा मानव, प्रकृति के साथ सामन्जय बनाये रखता है।

जैविक कृशि का सिद्धान्त प्रतिपादित करता है कि मनुश्य प्रक्रिया और चक्र पर आधारित है वह उनके साथ कार्य करता है तथा उनको जीवित रखने में सहयोग देता है।
है। पोशकता और स्वस्थ विषिश्ट उत्पादित पर्यावरण की प्रकृति के द्वारा प्राप्त किया जाता है। उदाहरण के लिए फसलों के लिए जीवित भूमि है पषुओं के लिए प्राकृतिक फॉर्म, मछली और समुद्री जीवों के लिए जलीय पर्यावरण आवष्यक हैं।

जैविक कृशि ग्रामीण, प्राचीन कृशि पद्धति, प्रकृति के चक्रीय और प्राकृतिक संतुलन के लिये उपयुक्त है। ये चक्र व्यापक हैं परन्तु उनका संचालन स्थान विषिश्ट होता है। जैविक कृशि स्थानीय प्रकृति, संस्कृति एवं पैमाने के अनुसार प्रबन्ध किया जाना चाहिए। प्राकृतिक संसाधनों के दोहन की रोकथाम एवं पर्यावरण संतुलन बनाये रखने हेतु उपलब्ध संसाध्‍ानों का प्रबन्धन एवं पुनःउपयोग स्थायित्व एवं जैव विविधता को संरक्षित रखने के लिए करना चाहिए। जैविक कृशि पद्धति के विकास, जीवों के स्थिरीकरण एवं कृशि विविधता को सुरक्षित रखते हुए जैविक कृशि द्वारा पर्यावरण संतुलन दिया जाना चाहिए। वे जो जैविक उत्पादन, संरक्षण एवं व्यवसाय करते हैं उनको पर्यावरण, जलवायु, जीवों, की विविध्‍ाता, वायु एवं जल की सुरक्षा बनाये रखने में सहायक होना चाहिए।

पारदर्षिता का सिद्धान्त

जैविक कृशि का मूल आधार होना चाहिए कि सभी जीवन्त प्राणी को स्वस्थ वातावरण तथा अच्छे जीवन यापन का मौलिक अधिकार है।

सुरक्षा के सिद्धान्त

जैविक कृशि विषिश्ट रुप से उत्तरदायित्वों के साथ प्रोत्साहित किया जाना चाहिए जिससे वर्तमान तथा भविश्य की पीढ़ी तथा सन्तुलित वातावरण अक्षुण बनाये रखने में सहायक रह सकें।

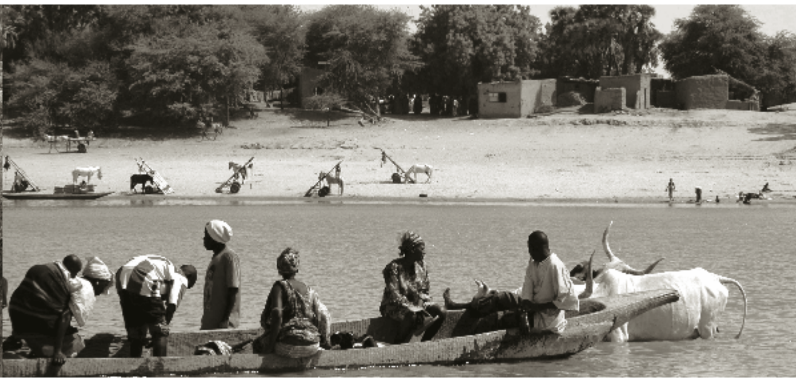

मानव मात्र एक समान, आदर, न्याय तथा आगे बढ़ने तथा अन्य जीवों के सह अस्त्वि के सम्बन्ध विकसित होने का है। ाके स्थापन के समय सामान्य पर्यावरण एवं जीवन की सम्भावनाओं के सम्बन्धों को ध्यान में रखना चाहिए। पारदर्षिता का चरित्र विवरण न्याय एवं आदर के साथ विष्व के प्रबन्ध ाकों एवं लोगों के बीच अन्य जीवों के सम्बन्धों के अनुसार होना चाहिए।

इन सिद्धान्तों के अनुसार जो जैविक कृशि से सम्बन्धित हैं उनको मानव सम्बन्धों को पारदर्षिता के साथ सभी स्तरों जैसे किसान, कार्यकर्ता, वितरक, व्यवसायी एवं उपयोग करने वालों को ध्यान में रखकर संचालन करना चाहिए। जैविक कृशि में लोगों को उच्च गुणवत्ता का जीवन,समान भोजन व्यवस्था एवं गरीबी उन्मूलन पर ध्यान देना चाहिए। इसका मुख्य उद्देष्य लोगों को उच्च गुणवत्ता के खाद्य एवं अन्य पदार्थों की पूर्ति करना है।

इस सिद्धान्त के अनुसार जानवरों को स्वस्थ जीवन हेतु अच्छे वातावरण तथा प्रबन्धन होना चाहिए जिससे उनका स्वास्थ्य एवं व्यवहार प्राकृतिक एवं अच्छा हो सके।

आज और कल की पीढ़ी एवं वातावरण के स्वास्थ्य की रक्षा सुदृढ़ रखने के लिए जैविक कृशि का प्रबन्धन सावधानी एवं जिम्मेदारी से करना आवष्यक है। जैविक कृशि एक जीवन्त एवं प्रगतिषील पद्धति है जो अन्तः एवं वाह्य आवष्यकताओं के प्रति पूर्ति में सहायक होती है। जैविक कृशि के कृशक भूमि की उर्वरता तथा उत्पादकता में वृद्धि कर सकते हैं परन्तु मानव स्वास्थ्य को खतरा किए बिना नई तकनीकियों क निर्धारण एवं अध्ययन करना आवष्यक है।

जैविक कृशि के प्रबन्धन, विकास एवं तकनीकियों के चुनाव में सावधानी एवं उत्तरदायित्वता के लिए ये सिद्धान्त व्याख्या करते हैं। लाभप्रद, सुरक्षित एवं स्वस्थ पर्यावरण हेतु विज्ञान जरुरी है। इसके लिये केवल वैज्ञानिक अनुभव ही जरुरी नहीं है बल्कि व्यावहारिक अनुभव, वर्शों से एकत्रित एवं प्रमाणित परम्परागत एवं स्वदेषी ज्ञान प्रबल निराकरण प्रस्तुत करते हैं। जैविक कृशि में उपयुक्त तकनीकियों को अपनाने से जोखिम को रोका जा सकता है एवं उन तकनीकों जैसे जीन अभियन्त्रिकी को अस्वीकार किया जा सकता है। इसके निर्णय व्यक्ति के नैतिक मूल्यों एवं आवष्यकतायों के आधार पर पारदर्षिता एवं सहभागिता से पूरा किया जाना चाहिए। जीम अंसनमे ंदक दममके व ि सस ूीव उपहीज इम ंमिबजमकए जीतवनही जतंदेचंतमदज ंदक चंतजपबपचंजवतल चतवबमेमेण

This document is a translation of the English document entitled “Principles of Organic Agriculture”, which text was adopted by the IFOAM General assembly in Adelaide in 2005 and is the only official reference for the Principles. IFOAM does not endorse responsibility for the content of this translated version. For any doubt regarding the exact meaning of its content, please refer to the English version.

IFOAM ORGANICS INTERNATIONAL

IFOAM's mission is leading, uniting and assisting the organic movement in its full diversity.

Our goal is the worldwide adoption of ecologically, socially and economically sound systems that are based on the Principles of Organic Agriculture.

IFOAM HEAD OFFICE
Charles-de-Gaulle-Str. 5
53113 Bonn, Germany
Phone: +49 - 228 - 92650 - 10
Fax: +49 - 228 - 92650 - 99
Email: HeadOffice@ifoam.bio
www.ifoam.bio